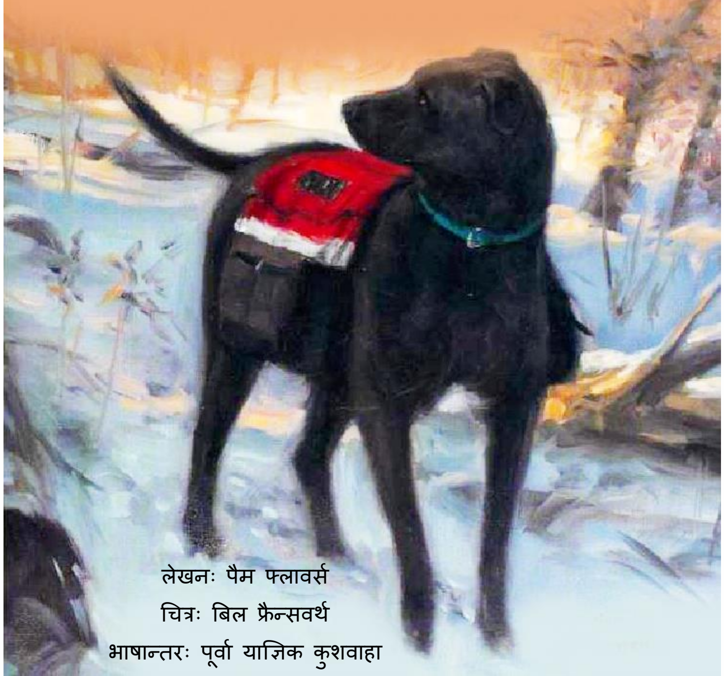
एली का लम्बा सफ़र



लेखनः पैम फ्लावर्स
चित्रः बिल फ्रैन्सवर्थ
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एली का
लम्बा सफ़र



लेखनः पैम फ्लावर्स

चित्रः बिल फ्रैन्सवर्थ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एली पिल्लों के बाड़े के किनारे दौड़ी, यह देखने कि आ कौन रहा है। जब उसने पैम का देखा, उसने अपने नन्हे पंजे उठाए, मानो कह रही हो,

“मुझे चुनो! मुझे चुनो!”

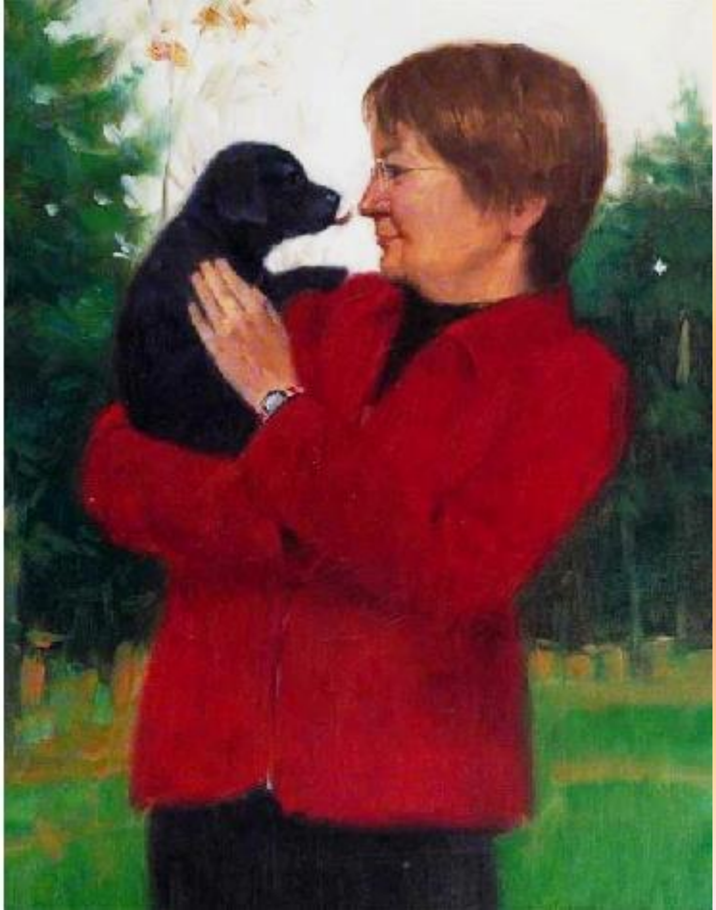
बाड़े में कुल सात नन्हे पिल्ले थे। सभी को अच्छे घरों की दरकार थी।

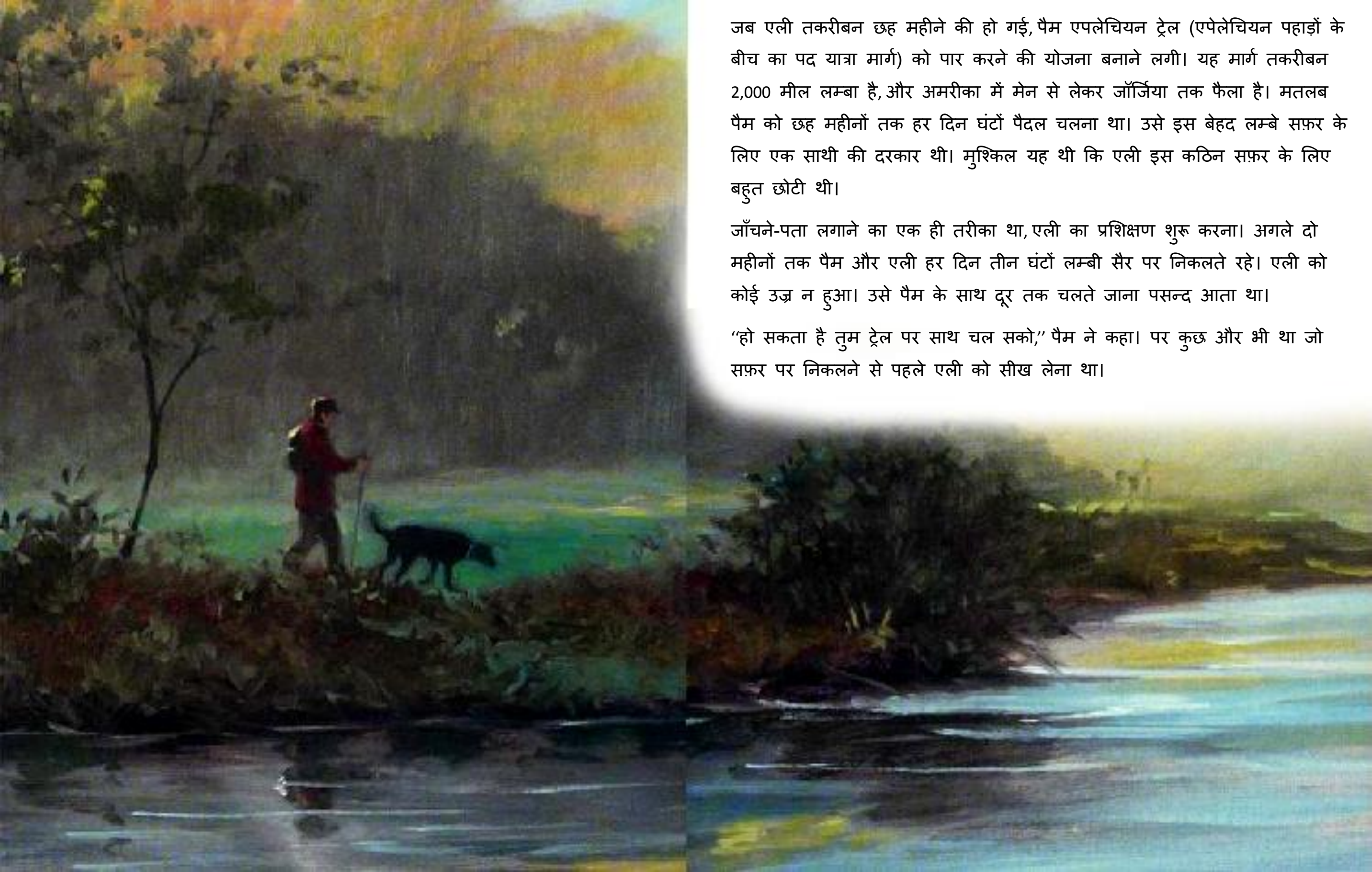
एली का रंग काला था और उसकी छाती पर एक सफेद निशान था। जब एली और पैम ने एक-दूसरे को देखा एली ने कुत्तों वाली उम्दा शराफ़त जताते हुए अपना सिर झुकाया और कान पीछे कर लिए।

पैम मुस्कुराई और उसने एली को बाँहों में उठा लिया। “मैं इसे गोद लूंगी। यह जता रही है कि वह अच्छी दोस्त बन सकेगी।“

पैम ने एली को घर में अपनी मेज़ के पास एक बड़े गोल बाड़े में रखा, ताकि दोनों दिन भर साथ रह सकें। एली ने अपनी पूंछ हिलाते अपने नए घर के कोने-कोने की छानबीन सूंघ कर की।

“देख रही हूँ कि तुम्हें नई जगहों की खोजबीन करना पसन्द है, एली,” पैम ने कहा। “और मुझे भी! तुम और मैं एक उम्दा टीम बनेंगे।”





जब एली तकरीबन छह महीने की हो गई, पैम एपलेचियन ट्रेल (एपेलेचियन पहाड़ों के बीच का पद यात्रा मार्ग) को पार करने की योजना बनाने लगी। यह मार्ग तकरीबन 2,000 मील लम्बा है, और अमरीका में मेन से लेकर जॉर्जिया तक फैला है। मतलब पैम को छह महीनों तक हर दिन घंटों पैदल चलना था। उसे इस बेहद लम्बे सफ़र के लिए एक साथी की दरकार थी। मुश्किल यह थी कि एली इस कठिन सफ़र के लिए बहुत छोटी थी।

जाँचने-पता लगाने का एक ही तरीका था, एली का प्रशिक्षण शुरू करना। अगले दो महीनों तक पैम और एली हर दिन तीन घंटों लम्बी सैर पर निकलते रहे। एली को कोई उज्र न हुआ। उसे पैम के साथ दूर तक चलते जाना पसन्द आता था।

"हो सकता है तुम ट्रेल पर साथ चल सको," पैम ने कहा। पर कुछ और भी था जो सफ़र पर निकलने से पहले एली को सीख लेना था।

दरअसल एपेलेचियन का पैदल सफ़र करते वक़्त दोनों को अपने पिट्‌ठी झोले उठाए चलना था। पैम एक तम्बू, सोने का बिस्तर, खाने-पीने का सामान और नक्शे ले जाने वाले थी। ओर एली को उसका खाना, उसका कटोरा और नाखून काटने वाली कतरनी उठानी थी।

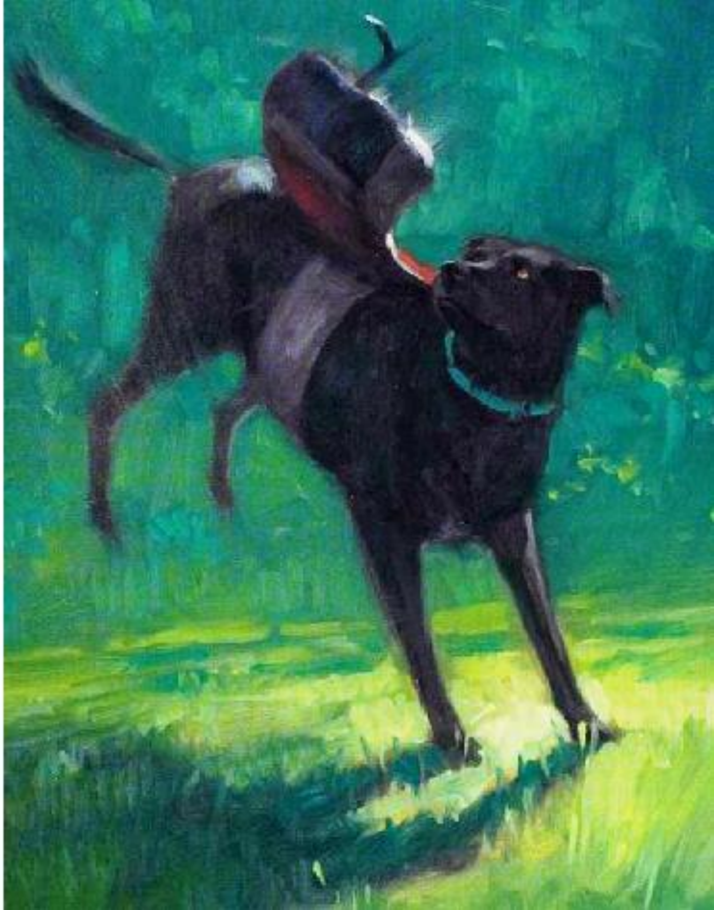
झोले ढोने का प्रशिक्षण फ़ौरन शुरु कर दिया गया। जब पैम ने पहली बार एली का पिट्‌ठी झोला उसकी पीठ पर बांधा, वह उछल कर सीधी खड़ी हुई, और गोल-गोल घूम उसे उतार फेंकने की कोशिश करने लगी।

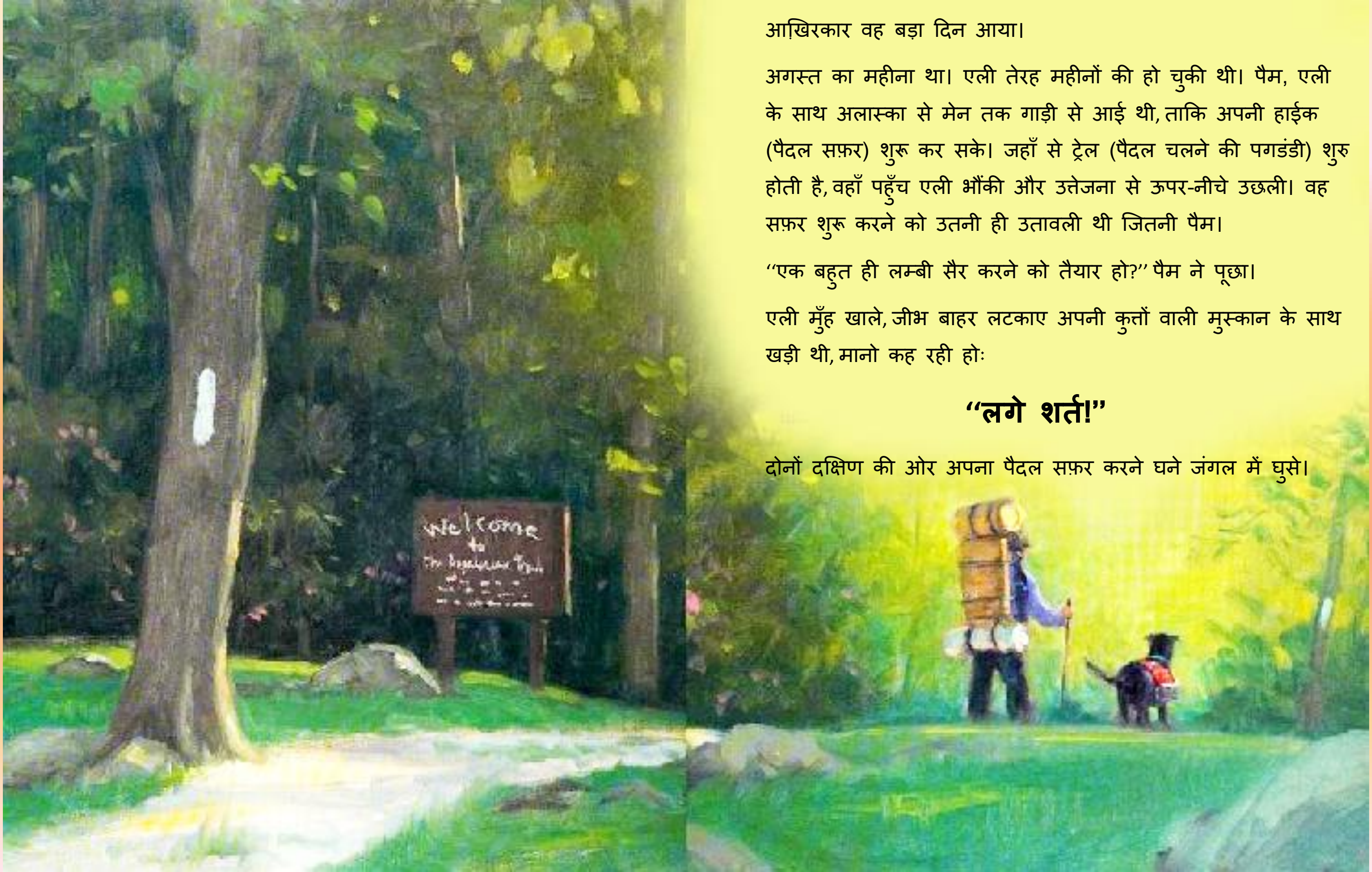
पैम हंस पड़ी, उसने झोला ठीक करते कहा, "फिक्र न करो एली तुम्हें जल्दी ही इसे ढ़ोने की आदत पड़ जाएगी।"

पहले दिन वे खाली झोलों के साथ चले।

तब हर दिन पैम उनमें थोड़ा-थेड़ा वज़न बढ़ा कर डालने लगी। चार महीनों में पैम और एली पूरी तरह ठसाठस भरे झोले पीठ पर लादे, बिना थके छह मील की दूरी तय करने लगे।

अब वे अपना सफ़र करने को तैयार थे।





आख़िरकार वह बड़ा दिन आया।

अगस्त का महीना था। एली तेरह महीनों की हो चुकी थी। पैम, एली के साथ अलास्का से मेन तक गाड़ी से आई थी, ताकि अपनी हाईक (पैदल सफ़र) शुरू कर सके। जहाँ से ट्रेल (पैदल चलने की पगडंडी) शुरु होती है, वहाँ पहुँच एली भौंकी और उत्तेजना से ऊपर-नीचे उछली। वह सफ़र शुरू करने को उतनी ही उतावली थी जितनी पैम।

''एक बहुत ही लम्बी सैर करने को तैयार हो?'' पैम ने पूछा।

एली मुँह खाले, जीभ बाहर लटकाए अपनी कुत्तों वाली मुस्कान के साथ खड़ी थी, मानो कह रही होः

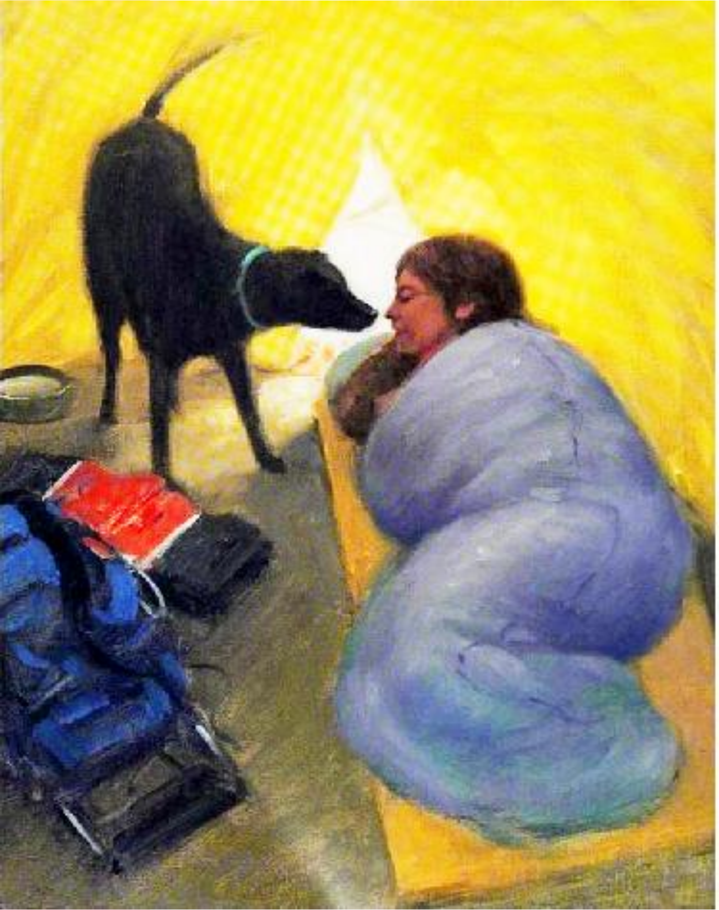
“लगे शर्त!”

दोनों दक्षिण की ओर अपना पैदल सफ़र करने घने जंगल में घुसे।

ट्रेल दरअसल एक संकरी पगडंडी थी, जो ऊँचे पेड़ों और ठूंठदार झाड़ियों के गिर्द घूमती-लहराती बढ़ रही थी। बीच-बीच में चट्टानों और पेड़ों पर सफ़ेद निशान थे जो रास्ते का संकेत दे रहे थे। कभी उनका रास्ता उन्हें सीधे पहाड़ियों के शिखर तक ले जाता, जहाँ से वे मीलों दूर तक का नज़ारा देख सकते थे। तो कभी वह छोटे कस्बों के बीच से गुज़रता, जहाँ सफेद निशान, फुटपाथ पर बने हुए थे।

जब मौसम खुशनुमा और राह सपाट होती पैम और एली दिन में बीस मील से भी ज़्यादा दूर तय कर पाते। पर जब मौसम खराब होता और मुश्किल ऊँचाइयों को पार करना होता वे केवल बारह मील ही चल पाते। सफ़ेद निशान उन्हें जहाँ बढ़ने को कहते वे जॉर्जिया तक उसी रास्ते बढ़ते चलने वाले थे।





पैम जानती थी कि ऐसे लम्बे और कठिन सफ़र को पूरा करने के लिए चलने, खाने-पीने और आराम करने की एक दैनिक समय-सारिणी होना बेहद ज़रूरी होता है।

पर एली की अपनी ही समय-सारिणी थी। हर सुबह जब पैम सो रही होती, एली दबे पाँव उसके पास जाती और अपनी ठण्डी, गीली नाक से पैम की नाक छूती। "ओह!" पैम चौंक कर जागने पर कहती।

एली मुस्काती, मानो कह रही होः

"लो, पकड़ा!"

पैम हंसती और कहती, "सुप्रभात मेरी सूर्यकिरण! नए दिन के लिए तैयार हो?"

दिन की ऐसी खुशनुमा शुरुआत उन्हें सामने आने वाली चुनौतियाँ झेलने में मदद करती थी।



अक्तूबर में जब पैम और एली वरमॉन्ट से गुज़र रहे थे, मौसम कई दिनों तक बहुत ही अच्छा रहा। तब एक शाम जैसे ही वे अपने तम्बू में घुसे, एक भारी तूफ़ान आ धमका। बिजलियाँ कड़कीं, बादल गरजे, और हवा हर झोंके के साथ तम्बू को झकझोरने लगी।

तूफ़ान घंटों-घंटों घुमड़ता रहा। रात के सबसे अंधेरे समय में पैम और एली एक ज़ोरदार कड़क और तब एक विस्फोट से हिल गए। पास ही कोई पेड़ धड़ाम से धरती पर आ गिरा था।

कड़ाक! एक और पेड़ टूटा।

कड़ाक! कड़ाक! कड़ाक!

पूरी रात तेज हवाओं ने एक के बाद दूसरे पेड़ को धराशायी किया। पैम डर रही थी। उसे लग रहा था कि कोई गिरता पेड़ उन्हें कुचल ही न डाले।

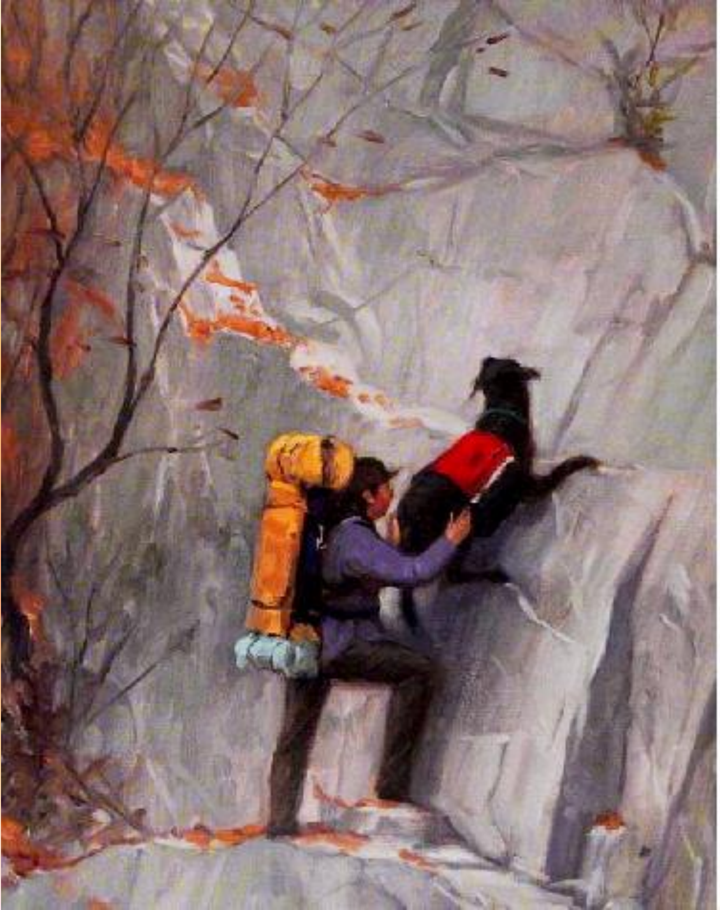
डर एली को भी लग रहा था। वह पैम के पास सरक आई। पैम ने उसके गले में हाथ डाला और उस पूरी भयंकर रात दोनों एक-दूसरे से चिपटे एक-दूसरे को लसल्ली देते रहे।

आख़िरकार तूफ़ान भोर में जा कर थमा। जब वे तम्बू से निकले पैम जंगल का हाल देख सकते में आ गई।

जंगल का फर्श टूटी डालों और धराशायी पेड़ों से अटा पड़ा था। पैम को समझ ही नहीं आ रहा था कि वह ट्रेल को तलाशे तो कैसे।

पर एली को रास्ता पता था। पहले जो यात्री उस रास्ते से गुज़रे होंगे उनका पता सूंघ कर लगाते एली ने पैम को आगे का रास्ता दिखाया।





एली ने पैम की कई तरह से मदद की, पर उसे भी कभी-कभार पैम की मदद की ज़रूरत पड़ी। एक बार जब वे कैनेटिकट में एक चौड़ी धारा पार कर रहे थे, पैम ने एली का पिट्ठी झोला उठाया, ताकि वह गीला न हो जाए।

और तब, जब उन्हें सामने खड़ी चट्टानी दीवार चढ़नी थीं। एली पैम की मदद से ही उसके कगारों पर चढ़ सकी।

वे एक-दूसरे को खुश रखने में भी मदद करते। एली ने एक खेल ईजाद कर लिया था। बीच में सुस्ताते समय जब पैम अपने दस्ताने उतारती, एली झपट कर उन्हें उठा कर भाग जाती।

एली तब तक दूर रहने का खेल खेलती, जब तक पैम पुकार कर यह न कहती, "एली! छोड़ो!"

खेल तब खत्म होता जब एली दस्ताने नीचे गिरा, पैम को देख अपनी कुत्ते वाली मुस्कान देती, जो यह कहती लगती,

"लो पकड़ा!"

एली की हरकतें पैम को हंसाती। एली को अपने साथी के साथ मस्ती करने में बड़ा ही मज़ा आता था।

जनवरी अपने साथ वर्जिनिया के पहाड़ों पर बर्फ़ लाई। एली आसमान से गिरते हिम कणों को देख पगला गई। वह उन्हें मुँह में पकड़ने की कोशिश करने लगी।

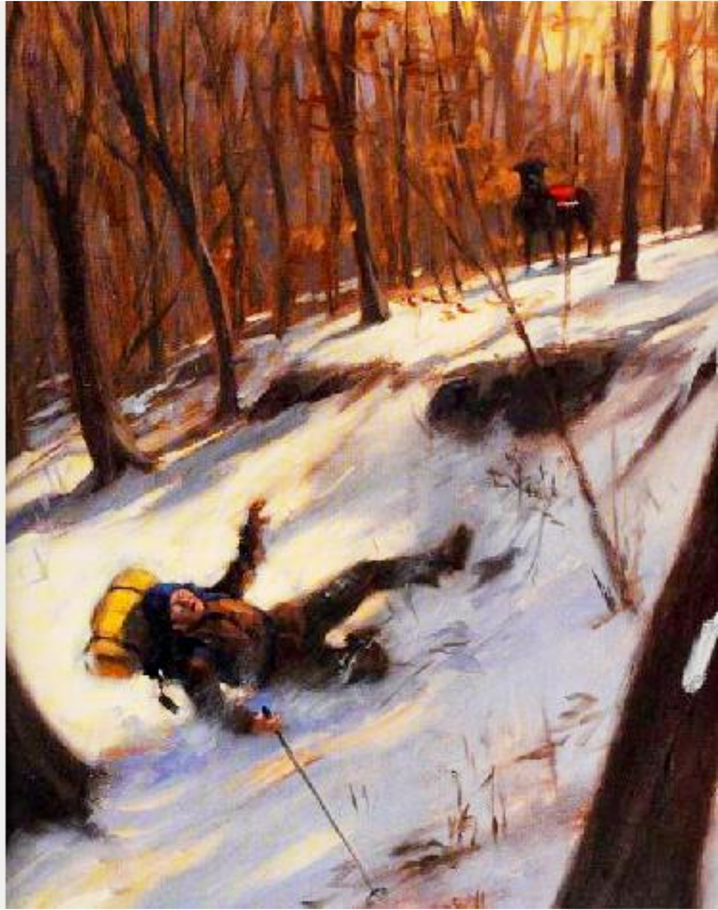
बर्फ़बारी से ट्रेल फिसलन भरी हो चली। एक खड़ी पहाड़ी चढ़ते वक्त पैम का पैर फिसला और वह ढ़ाल पर लुढकी।

"आहहहहहहह!"

पैम चीखी और लुढ़कते हुए एक पेड़ से जा टकराई।

"एली फौरन दौड़ती हुई पैम के पास पहुँची। उसने पैम का माथा सूंघा और कुनमुनाई।

पैम ने खड़े होने की कोशिश की और दर्द से कराह कर वापस नीचे गिरी। "ओह एली, मेरी पीठ में सचमें चोट लगी है। पता नहीं अपन यह सफ़र पूरा कर भी सकेंगे या नहीं।"

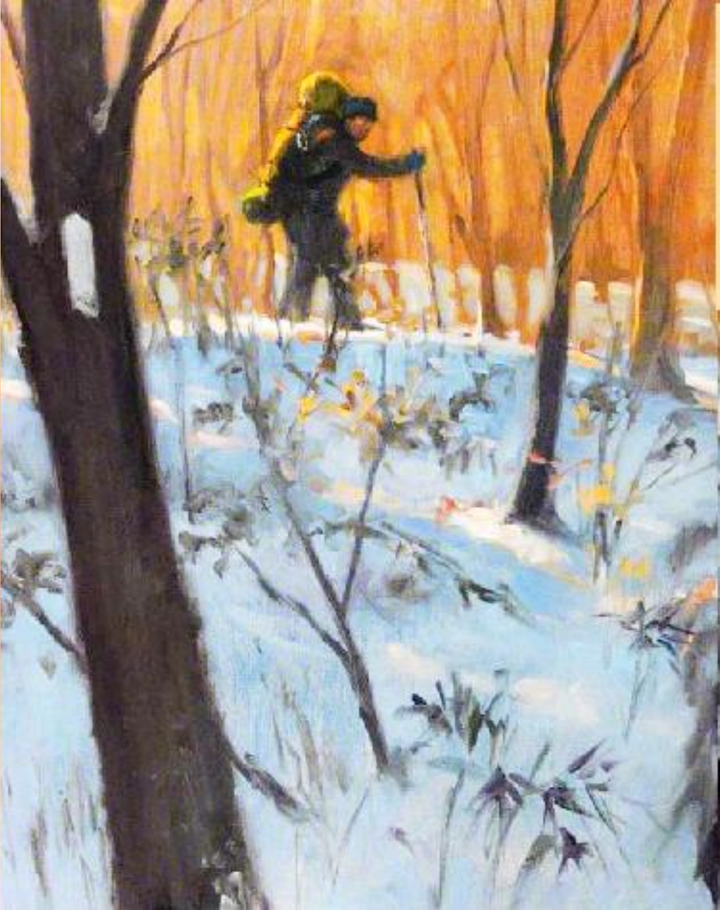


एली ने अपने पंजे से पैम का कंघा थपथपाया, मानो कह रही हो, “हिम्मत करो! मेहरबानी से उठो!” पैम बमुश्किल पैरों पर खड़ी हुई। एली मुड़ी और चन्द कदम आगे बढ़ रुक गई। उसने पलट कर पैम को देखा। वह चाहती थी कि पैम आगे बढ़ने की कोशिश करे।

पैम लंगड़ाते हुए कुछ कदम चली।

एली फिर कुछ आगे बढ़ी। पैम उसके पीछे चली।

वे धीमे-धीमे, एहतियात से राह पर बढ़ते गए।







अगले दिन तक मौसम बेहद ठण्डा हो चुका था। पैम की पीठ अकड़ी और चोटिल थी, उसे लग रहा था कि वह शायद अपना सफ़र जारी न रख सकेगी।

जब पैम और एली एक पहाड़ी नदी के पास से गुज़र रहे थे, रास्ता बर्फ से पटा था। पैम ने ग़ौर किया कि कुछ आगे जहाँ नदी झरने में बदलती है, वहाँ पानी जम चुका था।

पैम एली को रोकती उसके पहले एली सूंघते-सूंघते बर्फ़ पर चल पड़ी।

"एली, लौट आओ!" पैम ने अपना डर दबाते आवाज़ दी।

पर एली ने अपनी तहकीकात जारी रखी। उसके पंजों के नीचे की झीनी बर्फ़ तड़कने लगी।

"एली, फ़ौरन लौटो!" भयभीत पैम अब चीखी।

“कड़-कड़ाक! छपाक!”

पैम के देखते-देखते बर्फ़ की परत टूटी और एली बर्फ़ीले पानी की धारा में डूब गई।

एली ने अपने अगले पंजे बर्फ़ पर टिकाए और खुद को पानी से निकालने की कोशिश की, पर बर्फ़ हर बार तडक कर टूटती गई। एली निकल ही नहीं पा रही थी।

पैम उसकी मदद करना चाहती थी, पर बर्फ़ की परत पतली थी, वह किसी सूरत में एली तक पहुँच ही नहीं सकती थी।

पैम को ख़तरा महसूस हुआ कि एली बर्फ़ के नीचे धारा में बह कर झरने से नीचे न जा गिरे।

“लौट आओ एली!” बेबस पैम ने चिरौरी की। “कोशिश करती रहो!”

एली के पंजों की पकड़ फिसली, उसका सिर पानी की सतह के नीचे सरकने लगा। एली डूबने वाली थी!

“नहीं!” पैम पूरा दम लगा कर चीखी, “एली लौट आओ!”





एली ने पैम का आदेश सुना! उसने अपना सिर पानी से ऊपर उठाया। पंजों के नाखून बर्फ़ पर फंसाए। और एक बार फिर कोशिश की। इस बार बर्फ़ तड़क कर टूटी नहीं। एली ने पूरा दम लगा अपना शरीर पानी से बाहर निकाला। आख़िरकार वह बाहर थी।

"हाँ! हाँ!" पैम खुशी और राहत से भर चीखी।

पास आ एली ने अपना शरीर झटका, पानी हटाया, और पैम को यों देखा मानो कह रही होः

"चलो भी, अपन को आगे बढ़ना जो है!"

वह ट्रेल पर यों आगे चल पड़ी मानो कुछ कुछ हुआ ही न हो!

पैम ने सहमति में सिर हिलाया। "सही कह रही हो एली, हमें चलते जाना चाहिए।"



अपने सफ़र के आख़िरी दिन, 199 दिन चलते जाने के बाद पैम और एली एक लम्बी पहाड़ी से उतर कर एक छोटे से पार्किंग स्थल पर पहुँचे। मार्च का महीना था और कई लोग अपना सफ़र शुरु करने वहाँ जमा थे।

"आप कितनी दूर जा कर आई हैं?" एक पुरुष ने पैम से पूछा। इस थके और गंदे दिख रहे जोड़े को देखने और भी लोग पास आए।

"एली और मैंने पूरी एपलेचियन ट्रेल पार कर ली है," पैम ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

पास जमा भीड़ ने तालियाँ बजाईं, खुशी जाहर की। "बधाइयाँ!" वे चीखे।

एली मुस्कुराई और उसने तेज़ी से अपनी पूंछ हिलाई।

"हमने कर दिखाया एली," पैम ने उसे बड़ी-सी झप्पी देते कहा। "हम एक शानदार टीम हैं!"

उपसंहार

24 अगस्त 2009 को पैम और उसकी कुतिया एली, मेन के बैक्स्टर स्टेट पार्क से एपलेचियन ट्रेल को पैदल पार करने निकले। मेन से जार्जिया तक का यह सफ़र 2,000 मील से भी कुछ ज़्यादा का है। उन्हें यह सफ़र पूरा करने में छह महीने से कुछ अधिक समय लगा। 10 मार्च 2009 को, पूरी सर्दियों भर पैदल चलने के बाद पैम व एली सुरक्षित जॉर्जिया के एमिकोलेला फ़ॉल्स स्टेट पार्क पहुँचे। दोनों दोस्तों ने अपना सफ़र स्वस्थ रहते हुए खुशी-खुशी पूरा किया।







जिस पल पैम एली से मिली थी, उसे विश्वास हो गया था कि उसे एक नया दोस्त मिल गया है। पर पैम की उम्मीद सिर्फ दोस्ती से ज़्यादा थी। उसे दुनिया भर में मशहूर एपलेचियन ट्रेल को पैदल पार करने के लिए एक साथी चाहिए था।

क्या एली में इतना लम्बा सफ़र का पाने का दमख़म था?

इस लम्बे सफ़र के दौरान पैम और एली 2,000 मील पैदल चलने वाले थे। यह सत्य कथा इसी साहसिक पद यात्रा के बारे में है। वे राह में पहाड़ों पर चढ़े-उतरे, तूफ़ानों से बचे, खड़ी चट्टानों को पार किया। जानें कि इन दोनों दोस्तों ने किस तरह एक-दूसरे की मदद की, यह भी कि एली में इस लम्बे ख़तरनाक सफर को पूरा करने का दमख़म था भी या नहीं।

